823
H
232
P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

124/10/91

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 823

١/٨٥٤ ك

* वन्देमातरम् *

स्वराज्य का तेरहमासा

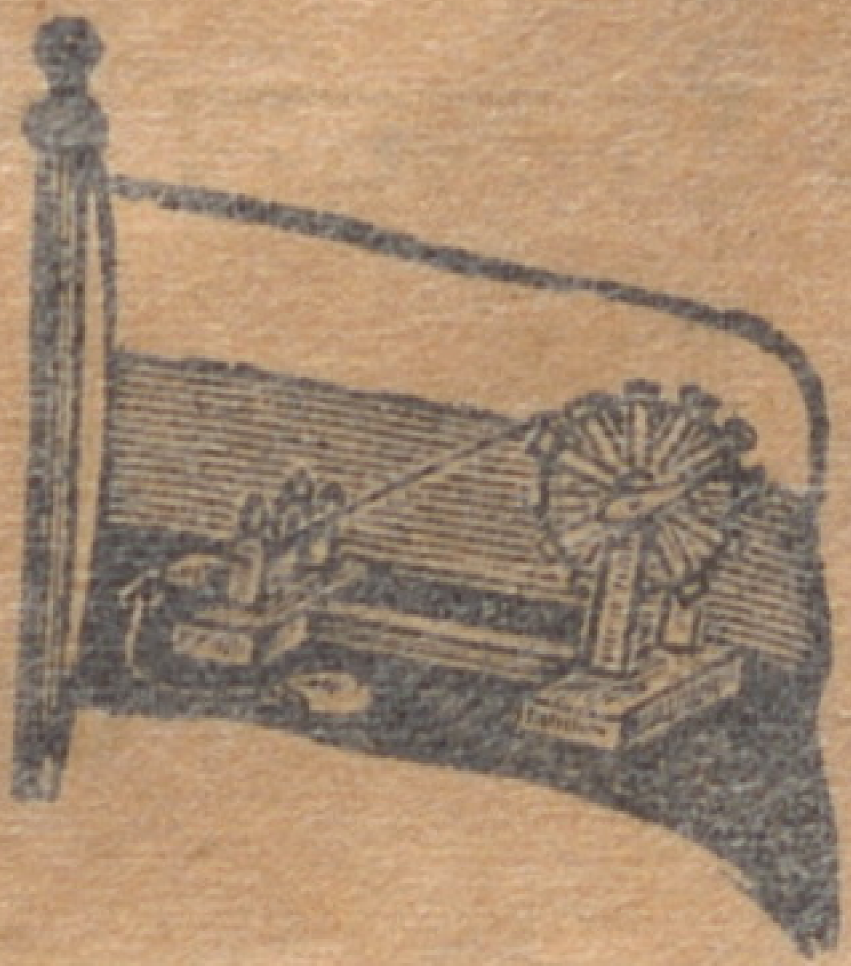

लेखक—दुर्गाप्रसाद गुप्त

प्रकाशक—

पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र"

"इन्द्र पुस्तकालय" सआदतगंज लखनऊ।

प्रथमबार ४०००] सन् १९३० ई० [मूल्य)॥

पं० द्वारकाप्रसाद तेवारी प्रिंटर व प्रोप्राइटर के प्रबंध से भारत भूषण प्रेस लखनऊ में छपा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. of INDIA
Acc. 823
Dt. 22.12.71
891.431
D 5695

॥ वन्देमातरम् ॥

॥ स्वराज्य का तेरहमासा ॥

टेक--चाहौ जो तुम स्वराज्य कही गांधी बाबा की मानो ।

॥ चैत ॥

चैत में चेतौ औ चरखा चलाओ । कातौ सूत और कपड़ा बुनाओ ॥ बचै धन तुम्हारा, कही चितलाओ कपड़ा बिदेशी न हर्गिज मंगाओ ॥ जो चाहो सुख उठानो। अरे चाहो जो तुम स्वराज्य० ॥

॥ बैसाख ॥

बैसाख में करके परस्पर प्रेम । छोटे बड़े सब मिल बांधौ ये नेम ॥ करो न लड़ाई, अदालत न जाओ । झगड़ा सब अपने घरों में चुकाओ । अरज मेरी मानों अरे० ॥

॥ जेठ ॥

जेठ में गर्मी से नाहीं डराव । घर २ में चरखे का मन्तर

चढ़ाव ॥ खुशी होके मन में, कातो सूत । भागो भगाओ विदेशी का भूत ॥ यही दिल में ठानो ॥ अरे० ॥

॥ असाढ़ ॥

मास असाढ़ लगी बरसात । है जग सुखी पै भिया घबरात । भये धन से खारिज, बई जय से फूट । मद मोह मत्सर से सब गए लूट । रहो ना ठिकानो ॥ अरे० ॥

॥ सावन ॥

सावन झुलुआ झूलै संसार । गावत सावन औ कजरी मलार ॥ बैठ झुलना पै, करके श्रृंगार ॥ भारत का करते क्यों सृष्टी संहार । साजि गिटपिट को बानो ॥ अरे० ॥

भादों

भादों में देखो घटा रही छाय । वर्षा उपाधि की हो रही भाय । सो पाइ पाइके, गये बौराय । देश पै आफत रहे क्यों दहाय ॥ सोचो अपनो बिरानो ॥ अरे० ॥

॥ क्वार ॥

क्वार में त्यागो गुलामी को मीत । चलिये हमेश

पुरानी ही रीत ॥ कहैं वेद शास्तर, औ कहती है नीति । कीजै न संगति करै जो अनीति । सदा दिल में ठानो ॥ ॥ अरे० ॥

॥ कार्तिक ॥

कार्तिक में मिल के सब लोग । वेगि हटाओ विदेशी का रोग । सहौ दुःख काहे, भजौ जगदीश । जो हैं चराचर सभी के अधीश ॥ इसे सत्य मानो ॥ अरे० ॥

॥ अगहन ॥

अगहन में खद्दर मँगवाय । रंग स्वदेशी से लीजै रँगाय बनाओ अङ्गरखा, रजाई सिलाय । कैसेहु जाड़े से नाहीं डराय । साजो खद्दर को बानो ॥ अरे० ॥

॥ पूष ॥

दसवां महीना लागो है पूस । समझैं विदेशी तुम्हैं मजबूत ॥ जरा सोचो समझौ, मन में आप । छोड़ो क्षणिक सुख औ तजि दीजै दाप ॥ हो गर सुख उठानो ॥ अरे० ॥

॥ माह ॥

माह में कीर्ति यही करि लेव । वस्त्र विदेशी सबै तजि

देव ॥ औ देश दशा हित, अब चित देव । अपने यहां का सुमारग लेव ॥ नाहीं अब है ठिकानो ॥ अरे० ॥

॥ फागुन ॥

फागुन में होली लीजै मनाय । बस्त्र बिदेशी सब होमै जलाय । औ करिकै प्रतिज्ञा, चरखा चलाव । देश को दारिद्र दुःख नसाव । सुनो धनवानो ॥ अरे० ॥

॥ लौंद ॥

लौंद में मानो श्री गांधी की बात । नेतन ने मारी उपाधि पै लात ॥ औ छोड़ि नौकरी, कहैं खिलाओ । घोर दमन से भी नाहीं डेराओ । जेल को तीर्थ मानो । अरे चाहो जो तुम स्वराज्य कही गांधी बाबा की मानो ॥

॥ इति श्री स्वराज्य का तेरह मासा समाप्तः ॥

———

आज़ाद कैदी की लुगाई का

बारहमासा

राष्ट्रीय

आलीरी बिन स्वराज्य कहो कैसे धीर धरूँ मैं ॥

१—आयो असाढ़ घुमड़ घनघोर स्वयंसेवक दल फिरैं चहुँ ओर उठै नभ काले मेघ घहरायँ इसै राष्ट्रीय गान रहो छाय सकल भारत में ॥ १ ॥ आलीरी०

२—सावन पिय के मिलन को बहार सो पिय मोरे बसे कारागार दमन हूँ दबाय दियो सरकार कैसे पिय सङ्ग खेलें मलार पहुँच जेलखाने ॥ २ ॥ आलीरी०

३—धनि धनि भादों अँधेरी रात, जामें जन्म लियो जदुनाथ जेलखाने को करो तप धाम धन मोरे पिय को वहीं बिश्राम दरश करूं कैसे ॥ ३ ॥ आलीरी०

४—क्वार मास में बिमल उगो चंद, ज्यों योग साधि प्रगटे अर्विन्द बहैं नद निर्मल नीर पुनीत, ज्यों गांधी की अहिंसात्मक नीति सकल जग पावनि ॥ ४ ॥ आलीरी०

५—कातिक में सखी गङ्ग नहाय, पुनिहौं मैं मनसे बिश्वेश्वर नाथ, जोर कर मांगूं यही वरदान, भारत केरो करो कल्याण स्वतंत्र प्रजा हो ॥ ५ ॥ आलीरी०

६—अगहन में सखी गौने आयँ, देखो चुनरियां लई रंगाय सुंदर गाढ़ा को पहिर मुसकाय, लखि पिया उनके न फूले समायं जाय हिय लौना ॥ ६ ॥ आलीरी०

७—पूस मास में पड़े तुसार, सोइहैं पिया खूब गोड़ पसार ओढ़ दुइ कम्मरी तसलिया शीश, तकिया लगै हैं परम पुनीत भई ना मोहूं ॥ ७ ॥ आलीरी०

८—माघ बसंत के गाऊं मैं गीत आठ महीना गए अब बीत रहे चार बाकी जेल से छूटि, अइहैं पिया जग में यश लूटि सोहाग भरी मैं ॥ ८ ॥ आलिरी०

९—फागुन में खेलिहैं फाग, लाला, नेहरू के जागे भाग गांधी पटेल प्रेम रंग बोरि, नेशन चरखे की तानै तोरि रिझैहैं सबों को ॥ ९ ॥ आलीरी०

१०—चैत मास टेसू फूलै पहार, मदनमोहन मालवी भे तैयार बनै खूब खद्दर मची धुन देश, होइहैं सभी को स्वदेशी सुवेष बिदेशी मलै कर ॥ १० ॥ आलीरी०

११—लागत ही सखि मास बैशाख, पिया मिलन की बढ़ी जिय आस देखि भारत में प्रेम अपार, सोवत चौंक उठी सरकार सोच करै मनमें ॥ ११ ॥ आलीरी०

१२—जेठ मास पड़े गर्मी महान, हो गयो गरम अब सारो जहान नरम ना रहे कोइ बूढ़े जवान, रोवें गुलाम लिये कलमदान जियब अब कैसे ॥ १२ ॥ आलीरी०

१३—लागत कौंद पिया आये मोर, मचिगो स्वदेशी २ को शोर सकल भारत में भयो आनंद, सिद्ध पिया मोरे होइगे स्वच्छन्द लगी म गले से ॥ १३ ॥ आलीरी०

इतिश्री आजाद कैदी की लुगाई का बारामासा समाप्तः ।

पुस्तक मिलने का पता—

पं० कन्हैयालाल दीक्षित "इन्द्र"

"इन्द्र पुस्तकालय" सआदतगंज लखनऊ ।

स्वदेश का सन्देश

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानायक
पं० जवाहिरलाल नेहरू
संचालक इन्द्र पुस्तकालय सआदतगंज लखनऊ।